उन्नत भारत अभियान

Gandikhata Cluster Interventions progress report

मुख्य जांचकर्ता – प्रो. विवेक कुमार गैण्डीखाता संकुल, हरिद्वार उत्तराखण्ड

स्थानीय सहयोगी – सुरभि फाउंडेशन, ग्राम पंचायत, कृष्णायण गोशाला

अभिसरण सहयोगी –जिला प्रशासन, कृषि विज्ञान केंद्र, हरिद्वार उधान विभाग, सहकारिता विभाग, खाध्य एवं प्रसंस्करण विभाग, उतराखंड

शिछा मंत्रालय भारत सरकार की महत्वपूर्ण परियोजना, उन्नत भारत अभियान के अंतर्गत आईआईटी दिल्ली ने उत्तराखंड के हरिद्वार जनपद में गैंडीखाता संकुल के पांच गांव गैण्डीखाता , नौरंगाबाद, लहाड़पुर, पिल्ली पड़ाव एवं लालढांग को 2017 में चिन्हित कर विकासकार्य सहभागिता में स्थानीय संस्था सुरभि फाउंडेशन के साथ मिलकर कार्य प्रारंभ किया है। प्रारम्भ में आईआईटी दिल्ली के एक समूह प्रोफेसर विवेक कुमार के नेतृत्व में इन गांवो का भम्रण कि तथा गांव वालो के साथ बैठक कर उन्नत भारत अभियान के द्वारा गांवो के विकास के लिए किये जाने वाले कार्यो के बारे में चर्चा कि । उन्नत भारत अभियान के दो व्यक्तियों का एक समूह इन गांवो में उपलब्ध संसाधन एवं मुलभुत समस्याओ को समझने के लिए सहभागिता ग्रामीण अवलोकन के अंतर्गत पारिवारिक सर्वेक्षण, ग्राम सर्वेक्षण, समूह बैठक, सामाजिक मानचित्र, संसाधन मानचित्र के माध्यम से इन पांच गांवो के संसाधन एवं समस्याओ को चिन्हित किया । चिन्हित की गयी कुछ प्रमुख संसाधन एवं समस्याएँ इस प्रकार है -

उपलब्ध संसाधन - कृषि एवं पशुपालन रोज़गार के प्रमुख संसाधन। ये सभी पांच गांव राजाजी राष्ट्रीय उद्यान अंतर्गत चिडयापुर रेंज के अधीन होने के कारन जंगलो से घिरा हुवा है। इन गांवो से गुजरने वाली रेवासन नदी में रेत खनन के कार्य से भूमिहीन परिवारों को वर्ष में तीन चार माह रोज़गार का अवसर प्राप्त हो जाता है।

मुलभुत समस्याएं - कृषि कार्यो में लगे किसानो को खरीफ की फसल के बाद आय के श्रोत बंद हो जाना । ईंधन के लिए लकड़ी का उपयोग जिसके कारन धुंवा जनित बीमारियो का प्रकोप। खेतो में लगी हुए फसल एवं सब्जियों को हाथी , बन्दर, निलगाय, जंगली सुवर जैसे जानवरो द्वारा खाना एवं बर्बाद करना । रासायनिक खाध एवं किटनासक के बढ़ते उपयोग से कृषि लागत में वृद्धि होना | इंटर के बाद उच्च उच्च शिक्षा के लिए हरिद्वार जाना पड़ता है यहां उच्च शिक्षण संस्थान नहीं हैं, अधिकांश लड़कियों और गरीब परिवारों के बच्चे इंटर के बाद पढ़ाई छोड़ देते हैं |

कार्यनिति

उपरोक्त संसाधन एवं समस्याओ का अध्ययन करने के बाद आईआईटी दिल्ली के ग्रामीण विकास एवं प्रोधोगिकी केंद्र ने इन गांवो के विकास के लिए एक समेकित योजना तैयार कर कार्य करना प्रारम्भ किया , जिसमे मशरुम की खेती को बढ़ावा देना, धुंवा रहित चूल्हे का उपयोग, लेमनग्रास की खेती, जैविक खेती को बढ़ावा देना, स्कूलो में छात्रों के लिए विशेष कछाएँ एवं संवाद प्रमुख कार्य रहे हैं |

परियोजना निधि कि व्यवस्था

उपरोक्त योजनाओ का प्रस्ताव बना कर ONGC नई दिल्ली को आर्थिक सहयोग हेतु प्रेषित किया गया, जिसे स्वीकृत करते हुवे ONGC नई दिल्ली, के द्वारा कॉर्पोरटे सोशल रेस्पोंसबिलिटी (CSR) के तहत वर्ष 2019 में वित्तीय सहयोग उपलब्ध कराया गया, जिसके बाद इन गांवो में उपरोक्त योजनाओ पर कार्य प्रारम्भ किया गया जिसके बहुत सुखद परिणाम आए है।

अभिसरण के लिए बिभिन्न विभागों के साथ समन्वय

सिमित संसाधन में अनेक कार्य को देखते हुवे उन्न्त भारत अभियान टीम चयनित गांवो में सरकार द्वारा संचालित योजनावो को जिला मुख्य विकास पदाधिकारी, हरिद्वार के सहयोग से विभिन्न विभागों के साथ मिलकर कार्य करना प्रारंभ किया, खाध्य एवं प्रसंस्करण विभाग, उद्यान विभाग, सहकारिता विभाग, कृषि विकास केंद्र हरिद्वार, शिक्षा विभाग एवं स्थानीय संस्थाए भी जुडती गयी जैसे ग्राम पंचायत, कृष्णायण गोशाला इत्यादि |

Name of the interventions

मशरुम की खेती - छह किसान परिवार शामिल थे इस कार्य में जो की उन्न्त भारत अभियान के सहयोग से मशरूम की खेती का प्रशिक्षण जुलाई 2019 में उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग उत्तराखंड के साथ अभिसरण के माध्यम से देहरादून में दिया गया। प्रशिक्षण के उपरांत इन किसानो ने अपने घर के ही एक कमरे को साफ सुथरा कर मशरूम के खेती के अनुकूल बनाया, उसके पश्चात ONGC CSR के सहयोग से इन्हे मशरुम कम्पोस्ट,बटन मशरूम स्पान, प्लास्टिक बैग इत्यादि उपलब्ध कराया गया, इन किसानो काफी सुगमता पूर्वक मशरूम की खेती अपने जीवन में पहली बार किया, सिर्फ खेती ही नहीं उनके भोजन की थाली में पोस्टिक मशरूम भी पहली बार परोसी जा रही थी, वास्तव में इन किसानो के घर में खुसियो की बौछार पुरे तीन महीनो के लिए रही क्योकि मशरूम बेचने से

प्रतिदिन इनके घर 100-200 रूपये की आय हो जा रही थी| मशरूम खरीदने वाले भी सभी ग्राहक उनके गांव और असपास के ही थे।

देहरादून में खाध्य एवं प्रसंस्करण विभाग में ट्रेनिंग लेते किसान

लालढांग, पिल्ली पडाव एवं गैण्डी खाता के किसान अपने अपने मशरुम हाउस में |

Oyster (ढिंगरी) मशरुम

बटन मशरूम की अच्छी खेती एवं बिक्री से उत्साहित किसानो ने COVID महामारी के बावजूद Oyster मशरुम की खेती प्रारंभ की, उन्नत भारत अभियान ने ONGC, नई दिल्ली के CSR के सहयोग से कुल पांच इच्छुक किसानो को oyster मशरुम की spawn एवं प्लास्टिक बैग देहरादून से उपलब्ध करायी | ओस्टर मशरुम की कम्पोस्ट किसानो ने स्वयं अपने घरो में उपलब्ध गेंहू के भूसा से बनाया तथा कम्पोस्ट बनाने के लिए जरुरी दवाई एवं केमिकल हरिद्वार कृषि मंडी से खरीद कर लायी और सफलता पूर्वक उत्पादन एवं बिक्री करने में सफल रहे |
स्थानीय लोगो एवं संस्थाओ का रुझान मशरुम उत्पादन में

ओएस्टर और बटन मशरुम की सफलता से उत्साहित वर्ष 2020 में 8 नए परिवार मशरुम की खेती करना प्रारंभ किये | COVID महामारी के समय दो स्थानीय किसान ने लालढांग एवं पिल्ली पडाव में दो बड़े मशरूम फार्म हाउस का निर्माण कर उत्पादन प्रारंभ कर दिए है, इनकी मशरुम उत्पादन छमता प्रतिदिन 1200 - 1500 kg प्रतिदिन है |एक नया मशरुम उत्पादन केंद्र पिल्ली पडाव में स्थापित हो रहा है| वर्तमान में यह संकुल एक मशरुम उत्पादक केंद्र के रूप में विकसित हो रहा है, इन दोनों मशरुम फार्म हाउस के कार्य में 70 -80 स्थानीय लोगो को रोज़गार के अवसर भी प्राप्त हुवे है, बड़े मशरूम फार्म हाउस खुलने से स्थानीय लोगो को रोजगार भी मिला है, दिहाड़ी मजदूर अब कुशल मजदूर बनकर अपनी कार्य छमता को भी समृद्ध कर रहे है, परन्तु छोटे मशरुम उत्पादक कम हो रहे है | उन्न्त भारत अभियान अगले सीजन से मशरुम किसान उत्पादक समूह बनाकर मशरुम से अधिक किसानो को जोड़ने का योजना बनाया है |

ओएस्टर मशरुम की कम्पोस्ट तैयार करते हुवे किसान क्रॉप के लिए सजाया गया कमरा |

लालढांग एवं पिल्ली पडाव के मशरुम उत्पादन केंद्र

पिल्ली पडाव में नए मशरुम उत्पादन प्लांट का कार्य तेजी से चल रहा है जो मई 2023 से उत्पादन शुरू करने वाले है |

Lemongrass cultivation and oil extraction - गैण्डीखाता संकुल के सभी ग्यारह पंचायत के 22 गांव में जंगली जानवर से किसानो को कृषि कार्य में काफी नुकसान उठाना पड़ता है | विशेष कर बंदर, नील गाय, जंगली सुवर कभी कभी तो ऐसा होता है की रात को उनके आँखों के सामने हाथियों का झुण्ड उनके फसल को खा रहे होते है और किसान कुछ कर भी नहीं पाते इस समस्या के निदान हेतु जल एवं भूमि सरंछन संस्थान देहरादून से सम्पर्क कर लेमनग्रास की खेती करने का विकल्प मिला, वर्ष 2019 में संकुल के 24 किसानो को जिनकी भूमि बंजर थी और जंगली जानवर के कारन जिस भूमि में खेती नहीं कर रहे थे वैसे किसानो को चिन्हित कर सम्बंधित विशेषज्ञों के साथ संकुल का भ्रमण किये किसानो को लेमनग्रास की खेती का जानकारी दिए गए, इसके फायदा और नुकसान बताकर प्रोत्साहित किया, तथा भूमि के उपयुक्त किस्म कृष्णा लेमन ग्रास का पौधा जो की ONGC के CSR के सहयोग से किसानो को उपलब्ध करा कर लगभग एक एकड़ भूमि से इसकी खेती प्रारंभ की गयी | किसान जो तिन महीने बाद एक फसल लेने के यादी शदियों से रहें है उनके लिए लेमनग्रास एक पहेली की तरह थी जिसे न जानवर खाते थे और न ही किसान | उन्न्त भारत अभियान

की टीम सहकारिता विभाग से समन्वय कर लेमनग्रास की दो आयल एक्सट्रैक्शन प्लांट श्यामपुर और पिल्लीपडाव में लगाया गया जिसके बाद वर्ष 2020 में पहली बार किसानो ने लेमनग्रास के आयल एक्सट्रेक्ट कर सहकारिता समिति को 1650 रूपये प्रति लिटर बेचे | किसानो की इसकी अच्छी मूल्य मिलने से वर्तमान में 20 किसानो ने 15 हेक्टेयर भूमि में खेती कर रहे है | लेमनग्रास की खेती में लागत अन्य फसलो के मुकाबले कम आती है एकबार पौधा लगाने के बाद चार पांच साल चल जाता है केवल सिचाई की अच्छी सुविधा होने से साल में तिन से चार फसल किसान ले लेते है | मार्केटिंग के लिए सहकारी समिती किसानो को सहयोग कर रही है |वर्तमान में पांच नए किसान किसान लेमनग्रास की खेती करने के लिए आगे आ रहे है जिनके फसल को जंगली जानवर नुकसान पहुंचातेक है |

पिल्ली पडाव में लेमन ग्रास के प्रथम किसान हंसराज जी बात करते उन्न्त भारत अभियान से जुड़े छात्र एवं श्यामपुर में लगे फसल

पिल्ली पडाव स्थापित लेमनग्रास आयल एक्सट्रैक्शन मशीन एवं किसान अपने खेत में

Smokeless cook stove/ Kitchen - संकुल के सभी गांवो में इंधन के लिए लकड़ी का उपयोग काफी प्रचलित हैं जो की आसानी से उपलब्ध भी हो जाता है, रसोई के धुंवा से सबसे ज्यादा महिंलाये और बच्चे इसके भुक्तभोगी होते है | आई आई टी दिल्ली के ग्रामीण विकास एवं प्रोधयोगिकी केंद्र में विकसित TEG कुक स्टोव का प्रदर्शन कर एक एक स्टोव पांच गांव में उपलब्ध कराये गए प्रति चूल्हे की लागत 5800/- रूपये थी जिसके लिए ग्रामीणों को कोई मूल्य नही चुकाना पड़ा इसके लिए भी ONGC CSR निधि से प्राप्त हुवा था | उसके बाद दस और चूल्हे ग्रामीणों की माँग पे उन्हें उपलब्ध कराये गए जिसके लिए उन्हें 1000 रूपये का सहयोग राशी उन्होंने दिया | धुंवा रहित TEG कुक

स्टोव के उपयोगकर्ताओं का एक समूह बनाया गया जो की धुंवा रहित रसोई के लिए जागरूकता का कार्य करते है तथा इसी समूह के नाम से स्थानीय बैंक में इनके दो सदस्यों का एक जॉइंट बचत खाता खुलाया गया | इसके कुछ समय बाद TISS तुलजापुर के छात्र गैणडीखाता संकुल को अध्यन के लिए आये जिसमे यह निष्कर्ष निकला की TEG कुक स्टोव ख़राब होने पे ग्रामीण इसे मरमम्त नहीं कर पाते है, तथा उनकी 4 - 5 लोगो के लिए भोजन बनाने के भी अनुकूल नहीं है | इसके बाद ग्रामीणों के जरुरत को ध्यान में रखते हुवे तिन युवावों को प्रसिछन देकर सोलर सपोर्टेड कुक स्टोव जो की TERI एवं आई आई दिल्ली के संयुक्त शोध से बनाया गया था, पांच गांवो में एक एक उपलब्ध कराया गया | जिसकी लागत 3000/- रूपये एवं उपभोगता का योगदान 500 रूपये था | इस धुंवा रहित चूल्हे को ग्रामीणों ने बहुत उत्सुकता के साथ देखने आने लगे और कई परिवारों ने इसे लेने की इच्छा जताई परन्तु COVID महामारी के कारन धुंवा रहित नए चूल्हे तो इन गांवो में नहीं आये लेकिन गांव के कई परिवार नए तरीके से अपने रसोई को धुंवा रहित बनाने में जुट गए है | संकुल में जो नए घर बन रहे है उनके धुंवा रहित रसोई के लिए स्थाई चिमनी का निर्माण किया जा रहा है | अब ग्रामीणों में धुंवा से होने वाले नुकसान के प्रति जागरूकता साफ देखा जा सकता है |

धुंवारहित TEG कुक स्टोव का प्रदर्शन ग्रामीणों के लिए उन्न्त भारत अभियान के सहयोगी नवरंगाबाद एवं गैण्डीखाता में करते हुवे |

TEG कुक स्टोव के उपयोगकर्ता अपने अपने घरो में खाना बनाते हुवे |

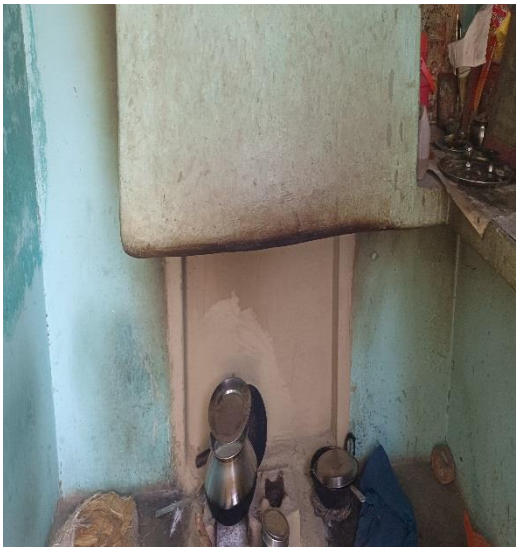

संकुल में धुंवारहित रसोई के लिए जागरूकता काफी बढ़ी है, कई परिवार स्वयं स्थाई चिमनी का निर्माण कर रहे है |

Organic cultivation -रसायिक किटनासक, खाद्य के बढ़ते उपयोग और कृषि कार्य में किसानो की लागत मूल्य को कम करने तथा गांवो में उपलब्ध गोबर को बेहतर उपयोग के लिए जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है | इस कार्य के लिए स्थानीय कृष्णायन गोशाला, केंद्र सरकार की नमामि गंगे परियोजना का अच्छा सहयोग मिल रहा है, वर्तमान में संकुल के लगभग सभी गांवो में जैविक खेती किसान अपना रहे है | जैविक खेती से जुड़ने वाले किसान शुरवात में रासयनिक खाध और कीटनाशक का उपयोग धीरे धीरे कम करते है केंचुवा खाध, बायो गैस के स्लरी, सूखे गोबर का उपयोग बढ़ाते है ऐसे करते हुवे पूर्णतः जैविक की तरफ आगे बढ़ रहे है | जैविक कीटनाशक दवाइ, केंचुवा खाध और बायो गैस के स्लरी स्थानीय स्तर पे कृष्णायण गोशाला, नमामि गंगे मिशन से जुड़े एजेंसी से उपलब्ध हो जाता है | जैविक खेती के लाभ को देखते हुवे पुरे संकुल में 45 किसान ने इसे अपनाया है | पिल्ली पडाव के कृष्णायण गोशाला में आदर्श जैविक कृषि परिसर भी संचालित है जंहा संकुल के किसान देखने सिखने के लिए भी जाते है |

पिल्लीपडाव' लाहड़पुर, लालढांग में बैगन, सरसों और लहसन के जैविक खेती से लहलाहते खेत |

Health camp - संकुल में कुछ गांव ऐसे भी है जंहा स्वास्थ सुविधाए उपलब्ध नहीं है वैसे गांवो में मोबाइल स्वास्थ वैन जो की रामकृष्ण मिशन अस्पताल हरिद्वार के सहयोग से स्वास्थ कैंप तथा स्वास्थ जागरूकता बैठक का आयोजन किया जाता है |

साप्ताहिक स्वास्थ शिविर में इलाज एवं जाँच कराते नवरंगाबाद के स्थानीय महिलांए |

SHGs formation and capacity building - उन्न्त भारत अभियान ने मुख्य विकास पदाधिकार हरिद्वार के सहयोग से राज्य आजीविका मिशन से सम्पूर्ण संकुल में महिला स्वयं सहायता समूह का गठन तथा वितीय समावेशन के लिए बैंक में खाता खुलवाया जा रहा है इससे महिलाये उत्साहित होकर सामाजिक कुरूतियो के खिलाफ आवाज उठाने लगे है अभी लाहड़पुर गांव में देशी शराब बेचने वाले और बनाने वाले लोगो को गांव से बहार कर दिया इस अभियान में गांव के सारी महिंलाये एकजुट थी |

स्वयं सहायता समूह के गठन के लिए बैठक एवं जागरूकता मीटिंग के बाद ग्रुप फोटो में|

Bee keeping and capacity building - संकुल में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों को देखते हुवे मधुपालन को बढ़ावा दिया जा रहा है, उद्यान विभाग की और से 400 मधुमखी बक्से का वितरण संकुल में किया गया था इसकी सफलता को देखते हुवे पुनः 20 किसानो का ट्रेनिंग संकुल में ही कराया गया है और प्रसिछित किसानो को भी मधुमखी बाक्स उपलब्ध कराये जायेंगे |

संकुल के विभिन्न गांवो से 25 किसानो को मधुमख्खी पालन के लिए ट्रेनिंग दी गयी है|

Poly house construction - विभिन्न प्रकार के सब्जी के अनुकूल वातावरण को देखते हुवे, सुरभि फाउंडेशन और उद्यान विभाग उत्तराखंड के सहयोग से 100 वर्ग मीटर का 120 पाली हाउस का निर्माण किया जा रहा है, उन्न्त भारत अभियान की टीम किसानो के चयन में किसानो को पाली हाउस के बेहतर उपयोग के लिए एक्सपोज़र विजिट भी कराया जा रहा है |

गैण्डीखाता में पंडित दिन दयाल उपाध्याय विज्ञान ग्राम संकुल परियोजना से बने पाली हाउस जो किसानो को जागरूक करने में काफी सहायक हुवा |

निर्माणाधीन पाली हाउस पीली पडाव में ऐसी 120 पाली हाउस का निर्माण अभी किया जा रहा है

Plantation and seed distribution - उद्यान विभाग उत्तराखंड के सहयोग से आम, अमरुद, निम्बू, आंवला, सहजन जैसे 5000 फलदार पौधो का वितरण संकुल के परिवारों में की गयी है, विभिन्न प्रकार के सब्जि एवं हल्दी के उन्नत किस्म के बिज भी किसानो को उपलब्ध कराया जाता है |

लहारपुर के किसान संकर किस्म के मौसमी सब्जी के बिज के साथ जो की उद्यान विभाग के सहयोग से उपलब्ध कराया जाता है |

गैण्डीखाता और पिल्ली पडाव में संकर बिज और फलदार पौधे दिखाते किसान |

ग्रामीणों को फलदार पौधे का वितरण श्री नीरज बिस्ट जी के सहयोग से |

School education - उच्च् शिछा के लिए केंद्र सरकार से वित् पोषित लालढांग में मॉडल डिग्री कालेज स्वीकृत की गयी है जिसका निर्माण कार्य पूर्ण होने वाला है और इसकी क्लासेज भी लालढांग प्रारंभ हो चुकी है, शहीद मनोज सिंह चौहान गवर्मेंट इंटर कॉलेज, गैंडीखाता में साइंस स्ट्रीम में भी चार सिछको के साथ वर्ष 2020-21 से पढाई प्रारंभ हो गयी है, पिल्ली पडाव उच्च विद्यालय, सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में छात्रो के लिए विशेष क्लासेज, स्कूल स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन, छात्रो के लिए कैरियर गाइडेंस क्लासेज भी उन्नत भारत अभियान के द्वारा आयोजित की जाती है |

उच्च विध्यालय में छात्रों के लिए विशेष सत्र लेते प्रो आर. शंकर |

Awareness campaign for plastic free village, drink boiled water, use of IHL - संकुल के सभी गांव जंगल, पहाड़, नदी से घिरे हुवे है इनकी आजीविका के मुख्य साधन भी कृषि एवं पशुपालन है ऐसे में प्लास्टिक का उपयोग कम करने के लिए बैठक, प्रभात फेरी का आयोजन कर लोगो जागरूक करने का प्रयास किया जा रहा है इसका असर भी इन गांवो में देखा अज सकता है |

गैण्डीखाता संकुल के एक विध्यालय में प्लास्टिक मुक्त गांव और व्यक्तिगत शोचालय के लिए शपथ लेते बच्चे

संकुल के स्कूल से प्रभात फेरी के लिए निकलते बच्चे |

गैण्डीखाता स्कूल में प्लास्टिक मुक्त गांव के सम्बंधित जागरूकता बैठक एवं प्रभात फेरी में भाग लेते विद्यार्थी |

मॉडल डिग्री कॉलेज - स्थानीय लोगो की एक बड़ी माँग को पूरा करते हुवे केंद्र सरकार ने राष्ट्रिय उच्चतर अभियान शिक्षा अभियान के तहत मॉडल डिग्री कॉलेज खोलने के लिए इसी संकुल का चयन किया था | कॉलेज के भवन निर्माण कार्य तेजी से चल रहँ है |

मॉडल डिग्री कॉलेज का निर्माणाधीन भवन जिसमे सत्र 2024-25 से क्लासेज प्रस्तावित है

All weather road connectivity in Nawrangabad village through PMGSY - प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के माध्यम से नवरंगाबाद गांव में पक्की सड़क का निर्माण किया गया है - उन्नत भारत अभियान के द्वारा जब वर्ष 2017 में संकुल में ग्राम और पारिवारिक सर्वे काम किया जा रहा था, उस समय ग्रामीणों की एक बड़ी मांग थी की नौरंगाबाद गैंडीखाता से जाने वाली कच्ची सड़क को पीसीसी सड़क में तब्दील किया जाय, क्यूँकी कीचड़ हो जाने के कारन गाँव वालो को गैंडीखाता मुख्य मार्ग तक आने में वर्ष में छः माह कीचड़ और छः माह धुल से लोग परेशान रहते थे | नौरंगाबाद ग्राम के इस प्रमुख मार्ग का कार्य प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना से पूर्ण किया गया है इससे ग्रामीणों को काफी सहूलियत मिला है, गांव में उत्पादित सब्जिओ को बाजार ले जाना काफी आसान हो गया है|

उन्न्त भारत अभियान के पहल से नवरंगाबाद सडक का कायाकल्प ग्रामीणों के जीवन का खुशहाली आई है |

****